अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

कुमांउनी कविता की परंपरा में 'षेरदा' एवं 'गिर्दा' की कविताएँ

भावना वर्मा
शोधार्थी हिन्दी विभाग
पी0एन0जी0 पी0जी0 कॉलेज, रामनगर
कुमाऊँ विश्वविद्यालय (नैनीताल)

इतिहास लेखन की परम्परा कुमाउनी साहित्य में मुख्य रूप से दो प्रकार से प्रचलित है। 1– मौखिक साहित्य और लोक साहित्य और 2– लिखित साहित्य, इस साहित्य को परिनिष्ठित साहित्य भी कहा जा सकता है मौखिक साहित्य अथवा लोक साहित्य हमारे पूर्वजों से सदियों से हमें श्रवण परम्परा तथा अलिखित रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित होता आ रहा है जिसे श्रवण और लिखित रूप में धरोहर की भाँति सदैव से संभाला और सजोया गया है।

कुमांउनी में लिखित षिष्ट साहित्य की परम्परा भी अधिक प्राचीन नही है माना जाता है कि सर्वप्रथम लोकरत्न गुमानी पन्त द्वारा लिखित साहित्य प्राप्त होता है कुमाउंनी भाषा का प्रयोग इग्यारवी सदीं से उपलब्ध ताम्रपत्रों, सनदों एवं सरकारी अभिलेखों में देखने को मिलता है साहित्यक अभिव्यक्ति के रूप में लेखन परम्परा के सुत्रधार गुमानी जी ही माने जाते है, 'गुमानी' से पूर्व भी कुमाउंनी में साहित्य लिखा जा रहा होगा। किन्तु उसके प्रमाणिक साक्ष्य नहीं होने के कारण वह वर्तमान में जनमानस के समक्ष उपलब्ध नहीं हैं।

कालक्रमानुसार कुमाउनी के उपलब्ध लिखित साहित्य के इतिहास को निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया गया हैं।

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

प्रथम चरण – (1800 ई0 से 1900 ई0 तक)

द्वितीय चरण – (1900 ई0 से 1950 ई0 तक)

तृतीय चरण – (1950 ई0 से अब तक)

कालक्रमानुसार और लेखन परम्परा में शेरसिंह बिष्ट 'अनपढ़' 'षेरदा' तथा गिरीष तिवाड़ी 'गिर्दा' दोनों ही तृतीय चरण (1950 ई0 से अब तक) में ठहरते हैं, इस काल की रचनाओं में सामाजिक, प्राकृतिक, स्थानीय परिवेष एंव भौगोलिक विषेषताएं पूर्णतः साकार हुई। उस समय राजनीतिक स्थिति भी डावांडोल थी देष आजाद हुआ था स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सांस्कृतिक सामाजिक पुर्नजागरण का भी समय था। देष का वातावरण तीव्र गति से बदलने लगा कविता लेखन की विषय वस्तु भी बदलने लगी, समस्याओं की अभिव्यक्ति का माध्यम कविताएं होने लगी सामान्य से लेकर गंभीर विषय कविताओं के माध्यम से सामने आने लगे उसी समय चीनी आक्रमण और फिर पाकिस्तानी आक्रमण को लेकर भी ओजस्वी और देषभक्तिपरक कविताओं का लेखन कार्य प्रारम्भ हुआ।

ऐसी ही परिस्थितियों में शेरदा एवं गिर्दा दोनों ही महान कवियों ने अपने स्वरों को लेखन रूप में अभिव्यक्त किया। शेर सिंह बिष्ट 'अनपढ़' शेरदा का जन्म सन् 1935 ग्राम माल, अल्मोड़ा के एक निर्धन परिवार में हुआ। पिता का नाम श्री बचे सिंह तथा माता का नाम श्रीमती लछीमा देवी था। पिता की मृत्यु हो जाने के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति खराब थी माँ शहर के अनेक घरों में बर्तन धोने, सफाई और कपड़े धोने आदि के काम से किसी तरह पेट की भूख को शान्त किया करते थे। 'शेरदा' ने भी छोटी उम्र में किसी मास्टरनी के घर पर उसका बच्चा पकड़ने का कार्य करते–करते अक्षरबोध किया। तेरह साल की उम्र में वे घर से भागकर आगरा चले गये जहां भर्ती दफ्तर में पहुचकर स्वयं को चौथी कक्षा अनुर्तीण बताकर ए0एस0सी0 बॉय कम्पनी में नौकरी प्राप्त कर मेरठ चले गये ट्रेनिंग के बाद इन्हें सिपाही ड्राईवर बना दिया गया। इनका स्वास्थ्य खराब होने पर इन्हें पूना मिलट्री अस्पताल में भर्ती होना पड़ा जहां इन्हें सन 1962 ई0 के भारत–चीन युद्व में घायल हुए अनेक फौजी जवानों के बीच रहने और उनकी मुहँ जुबानी उनकी कहानी सुनने का मौका मिला, उनकी आप–बीती और दुखः भरी दास्तां सुनकर इनका कवि ह्रदय जाग

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

उठा। और ये लेखन कार्य में लग गये। इन्होनें **'ये कहानी नेफा और लद्दाख की' (1962–63) 'दिदी वैणी', 'हसणै बहार' और', 'हमार मैं बाप'** नामक छोटी–छोटी तीन पुस्तिकाएं भी प्रकाषित हुई। इसके पष्चात इनके तीन और कुमाउनी कविता संग्रह प्रकाषित हुए जिनमें **'मेरी लटि–पटि' (1981) 'जाठिक घुडुंर (1994) तथा 'फचैक'** (बालम सिंह जनौटी के साथ) (1996)। सेवानिवृति के बाद 'षेरदा' गीत और नाटक प्रभाग में कलाकार रूप में कार्य करने लगे।

'षेरदा' की कविताओं में **'ये कहानी है नेफा और लद्दाख की'** में राष्ट्र प्रेम एवं देष भक्ति की प्रधानता है इन कविताओं में 'षेरदा' ने राष्ट्रीय स्वाभिमान और देष भक्ति, देष प्रेम तथा देष की रक्षा की खातिर जिन वीर सपूतों एवं रणबाकुरों ने अक्टूबर 1962 के चीन युद्व में प्राणों की परवाह करते हुए अदम्य साहस का परिचय दिया है 'षेरदा' ने उनके आक्रोष को निम्न शब्दों में अभिव्यक्त किया है,

छुरा दिखाया जिस पापी ने, बदले आज प्यार के, भाई कह कर गोली चलाई, जिस दुष्मन गद्दार ने ,

लेंगें बदला इस धोखे का, इस कपटी मक्कार से, लात मारकर निकाल दो वीरों, नेफा और लद्दाख से, /

'षेरदा' युद्व भूमि में वीरगति को प्राप्त हुए सैनिको ं के प्रति संवेदना और उनके बलिदान को अविस्मरणीय बताते हुए देषवासियों की भावनाओं को व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

''कोटी–कोटी भारतवासी आज करते हैं प्रमाण तुम्हें धन्य–धन्य कह रहा शहीदों, आज सारा जहांन तुम्हें ,

रहे जब तक धरती आकाष, बहे गंगा–यमुना में पानी, तब तक वीरों याद रहेगीं, तुम्हारी यह अमिट कहानी,

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

'षेरदा' की कविता सृजन की दूसरी प्रेरक घटना भी पूना में घटित हुई। जब उन्होंने देखा गरीब घरों की औरतें, लडकियाँ पहाड़ से भगाकर कोठों में देह व्यापार के कार्य में लगा दी गई। उनके नरक जैसे जीवन की कहानी को देखकर 'शेरदा' का हृदय रो–रो कर काँप उठा उनकी यह अश्रुधारा अपनी मातृभाषा कुमाउनी में कविता रूप में फूट पड़ी। जिसे इन्होनें ***'दीदी वैणी'*** शीर्षक से प्रकाषित कराया, इस कविता की कुछ पंक्तियां निम्नलिखित है–

नी रयो इमान बाबू, नी रयो धरम।

के नी रई लोक–लाज नी रई शरम ।

नान–तुला दीदी वैणी, भाजण फै गई।

कदुका पहाड़ा वैणी, देषन ए गई ।

'षेरदा' ने कुमाउनी में गंगा को निर्मल और पतित पावनी कहा और 'कठौती में गंगा' (1985) शीर्षक से एक गीत नृत्य नाटिका की भी रचना की, इस नाटिका के अन्त में नेपथ्य गीत के निम्न स्वर भी सुनाई देते हैं।

आज नैं क्वें ऊँच–नीच।

हम सब भाई–भाई ।

हम सब धरती लाल।

धरती हमरि माई ।

जै–जै भारत माई ।

शेरदा' की कविता **'को छै तु'** अत्यधिक लोकप्रिय कविता है। नारी सौन्दर्य निरूपण का परिचय दिया है और प्रकृति के नाना प्रकार की वस्तुओं से नायिका का सौन्दर्य बोध

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

कराया है। इस कविता को अध्ययन करने पर उन्हें 'अनपढ़' कहना उचित नही ठहरता, उन्होनें भाव सौन्दर्य और काव्यरस की भी अभिव्यक्ति की है–

भुर–भुर उज्याव जसि जाणि रत्तै व्याण ।

भेकुवे सिकड़ि कसि ओड़ि जै निषाण।

खित्त कनै हंसण झऊ कनै चाण।

क्वाठन कुरकाति लगूँ मुखक बुलाण।

'शेरदा' ने भारतीय राजनीति पर भी व्यंग्य किया है और लोकतंत्र की दषा की ओर भी संकेत किया है। नेताओं के झूठे वादे और भष्ट्राचार, मूल्यहीनता का परिचय निम्न पंक्तियों में दिया है–

जो बात बात में हात मानी

वै हैती कूनी ग्राम सभा

जाँ हर बात में लात मानीं

वै हैती कूनी विधान सभा.....

जाँ सब कूनी और क्वे न सुणन

वै हैती कूनी लोक सभा !

'षेरदा' ने नेताओं के चुनाव के वक्त के चोचलें और चुनाव जीतने के लिए नेताओं की मिथ्या घोषणाएं, जनता को लालच देकर बहला–फुसलाकर वोट मिलने के बाद जनता की सुध तक नहीं लेते न उनकी समस्याएं देखते हैं इन पंक्तियों में दर्षाया गया है–

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

नैताज्यू वोटैकि ओट में चटणि चटै गई

यो–ऊ मिलौल कै सौ गिन्ती रटै गई ।............

सौ सुखूँल भरि दयूँल कूँछी जो हमौर फोचिन

जे लै छि फोचिन में उ लै टपकै खै गई '।

शेरदा 'अनपढ़' की कविताओं में भाव सौन्दर्य एवं कला दोनों ही दृष्टियों से इनकी कविता प्रषंसनीय है। 'बसंत' कविता की कुछ पंक्तियां निम्नलिखित हैं।

मखमली उज्याव घुरी रौ ग्यू मसूरै सार

बलाड़ँ गलाड़ जामि गई, पिडवा दनकार

कौई गई दिन यारो, बौई गई रात।

ष 'षेरदा' गाँधी से बहुत प्रभावित थे, उनकी **'बापू तेरी भौतें याद ऊनै'** तथा 'हुलारि आओ बापू' कविताओं में यह प्रभाव स्पष्ट नजर आता है। इन्होनें गाँधी जी पर नाटिका 'समर यात्रा' का अभिनय किया जिसमें इन्होनें गाँधी जी का किरदार निभाया गाँधी जी उनके हृदय में बसे हुए थे वे लिखते हैं–

तेरि अन्वार मेरि मुखनै छुटनै, बापू तेरि भौते याद ऊनै।

'शेरदा' आगे कहते हैं गाँधी जी एक मात्र ऐसे महापुरूष थे जिन्हें बच्चे, बूढ़े, जवान, निरक्षर, अम्मा, से लेकर पढ़े–लिखे शहरी जनता आज भी याद करती है शेरदा लिखते है–

हुलरि आओ बापू तुम माठू–माठू

आसै लागि रयूँ मैं बाटैं–बाट।।

शेरदा ने कुमाउनी कविता एवं संस्कृति के विकास और प्रसार के क्षेत्र में अत्यधिक योगदान दिया इनके अमूल्य सेवा के लिए विभिन्न संस्थाओं ने इनहें सम्मानित किया जिनमें 'ऑखर संस्था लखनऊ' 'गंगा प्रसाद मंच' टिहरी' 'षरदोत्सव समिति'पिथौरागढ़, कुमाउनी संस्कृति

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

परिषद कौसानी, हिन्दी संस्थान उत्तर प्रदेष, आदि अन्य अनेक संस्था हैं जहाँ अपनी संस्कृति अपनी धरोहर के रखरखाव हेतु इन्हें हमेषा याद किया जाएगा।

गिरीश तिवारी 'गिर्दा' भी कुमाउनी कविता लेखन के कालक्रमानुसार तृतीय चरण में ठहरते हैं 'गिर्दा' का जन्म 9 सितम्बर सन् 1945 ई0 में अल्मोड़ा के हवालबाग में ज्याली नामक ग्राम में हुआ था इनके पिता का नाम श्री हंसादत्त तिवाड़ी तथा माता का नाम श्रीमती जीवंती देवी था। इनकी हाईस्कूल तक की षिक्षा राजकीय इंटर कॉलेज अल्मोड़ा से सम्पन्न हुई तथा इंटर की परीक्षा नैनीताल से उत्तीर्ण की, आजीविका चलाने के लिए क्लर्क से लेकर वर्कचार्ज तक काम करना पड़ा फिर संस्कृति और सृजन के संयोग ने कुछ अलग करने की लालसा पैदा की और ये अभिलाषा पूरी हुई जब हिमालय और पर्वतीय क्षेत्र के लोक संस्कृति से सम्बद्व कुछ करने का अवसर मिला 'गिर्दा' ने जो नाटक निर्देषित किये वे हैं– 'अन्धायुग', 'अन्धेर नगरी', 'थैक्यू मिस्टर ग्लाड़' 'भारत दुर्दषा आदि प्रमुख हैं। साथ ही 'नगाड़े खामोष हैं' और 'धनुष यज्ञ' नाटकों का लेखन किया 'गिर्दा' ने कुमाउनी हिन्दी की अनेक कविताएं लिखी । इन्होनें 'षिखरों के स्वर (1969) हमारी कविता के आँखर (1978) में सहलेखक तथा 'रंग डारि दियो हो अनबेलन में' के सम्पादक रहें और 'उत्तराखण्ड काव्य' (2002) के रचनाकार रहे 'झूसिया दमाई' पर इन्होनें अपने अनेक सहयोगियों के साथ शोधकार्य कर अत्यन्त महत्वपूर्ण संकलन तैयार किया। उन्होनें उत्तराखण्ड के अनेक ओन्दोलनों में हिस्सेदारी की इनकी कई बार गिरफ्तारी भी हुई गिर्दा आजीवन जन संघर्षो से जुड़े रहें तथा अपनी कविताओं में जन पीड़ा को सषक्त अभिव्यक्ति देते रहे।

'षेरदा' की भांति 'गिर्दा' की कविताओं में अपने मुल्क अपनी संस्कृति अपने राज्य के लिए सदैव चिंता नजर आती है वो कहते हैं भारत आजाद हुए लगभग कई वर्ष हो गये हैं लेकिन आम जनता के हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं इस लिए 'गिर्दा' सचेत करते हैं–

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

पत्थर सा जिगर, पानी सी जुबां

वालों का भरोसा क्या कीजै।

हर बात में बात पलटते हैं

ऐसो का भरोसा क्या किजै।

जैसा की हम सभी जानते हैं कि 'गिर्दा' नाटककार और एक रंगकर्मी भी थे तो उनकी गजलें और शेर भी स्वाभाविक है इसीलिए उनके शेर कहीं–कहीं नाटकीय तेवर के साथ निकलतें हैं।–

हालते सरकार ऐसी हो पड़ी तो क्या करें ?

हो गई लाजिम जलानी झोपड़ी तो क्या करें ?

गोलियाँ कोई निषाना बाँधकर दागी थी क्या ?

खुद निषाने पर पड़ी आ खोपड़ी तो क्या करें ?

'गिर्दा' के अनेक गीत पहाड़ की संवेदनाओं में बस गये हैं जिन्हें आज भी मुख्य अवसरों पर गाया जाता है–

आज हिमाल तुमन कै धत्यूछ

जागो जागो हो म्यारा लाल ।

तथा

जैता एक दिन तो आलो उ दिन यो दुनी में।

'गिर्दा' अद्भुत थे। वे कुमाउनी लोक कविताओं में उपमाएं अद्वितीय देते थे उन्होनें मालूषाही की उपमाओं को कैसे–कैसे प्रस्तुत किया है–

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

दुती कसी ज्यून है गैछ, पुन्यू कसी चाना

बैसाखी सुरजि जसी, चैत की कैरूवा जसी

पूस की पालंगा जसी.....

'गिर्दा' का प्रकृति वर्णन अत्यधिक प्रषंसनीय है उन्होनें गाँव के माहौल वहां की स्थिति तथा दिनचर्या का अद्भुत वर्णन किया है। इन्होनें कविता में ऐसे बिंब प्रस्तुत किये हैं जिससे वे शब्दों से दृष्य जीवित हो उठते हैं जैसे–

छानी खरिक में धुवां लगा है, ओ हो रे,

आय हाय रे ओ हो रे ऽ ऽ ऽ ऽ ओ दिगो लाली

मुष्किल से आमा का चूल्हा जला है

गीली है लकड़ी कि गीला धुवां है

साग क्या छोंका कि गौं महका है

ओ ऽऽ होऽ ऽ रेऽ आय हाय रे ऽ ऽऽऽ

उत्तराखण्ड आन्दोलन के दौरान उनके द्वारा बनाई कविताओं को क्रमवार संजोया गया। उनके गीतों और कविताओं में आम जन की पीड़ा झलकती थी उनका दुखः–दर्द, समस्याएं नजर आती थी। खटीमा कांड, मुज्जफरनगर कांड में उत्तराखण्डी माँ बहनों के साथ जो अन्याय हुआ उसके खिलाफ 'गिर्दा' कवि आक्रोष को 'बाग्स्यौरौंक गीत' 1995 के माध्यम से प्रस्फुटित होता है जिसमें उन्होनें बागेष्वर में बहने वाली सरयू– गोमती नदियों के जल से गंगाजली उठाकर पृथक उत्तराखण्ड राज्य हेतु कसम खाकर कहते हैं–

सरजू–गोमती संगम में गंगाजली उठूलों

बागस्याराक बगड़ू में हितों वै फैसाल करूलों

उत्तराखण्ड ल्हयूलो वैणी ! उत्तराखण्ड ल्हय

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

'गिर्दा' पर्यावरण के भी संरक्षक थे उनकी चिपको आन्दोलन में भी भूमिका रही वे राज्य की जलवायु, पेड़–पौधों, नदी आदि से लगाव रखते थे। 'गिर्दा' का उत्तराखण्ड जो हमारी मातृभूमि है उससे गहरा स्नेह था वे लिखते है–

उत्तराखण्ड मेरी मातृभूमि,

मातृभूमि मेरी पितृभूमि

ओ भूमि तेरी जै–जै कारा, म्यारा हिमाला

ख्वार मुकुट तेरी हयूँ झलको,

छलकी गाल गंगै की धारा, म्यार हिमाला।

'गिर्दा' ने पृथक राज्य उत्तराखण्ड के लिए भी अत्यधिक प्रयास किया वे चाहते हैं कि सभी राज्य वासियों का जीवन स्तर ऊँचा उठे उन्हें भी सभी प्रकार की सुख सुविधाएं प्राप्त हो वे कहते थे, **''कस होलो उत्तराखण्ड' काँ होली राजधानी राग–बागी यों आजि करला आपुणि मनैमानी,''** 'गिर्दा' हिमालय के लगातार टूटने, जंगलों के कटने को पहाड़ के जल, जंगल और संसाधन के दोहन, खनन को विकास के मार्ग में बाधा मानते थे चिपको आन्दोलन के समय 'गिर्दा'' कहते रहे–

'ढुंग बेचो, माट बेचो बैची खै बज्याणी ,

लिस खोपी–खोपी मेरी उधेड़ी दी खाल,

बीसवीं सदी के आखरी दषक में जब अलग उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन परवान चढ़ा तब उस राज्य का सपने में जन अभिव्यक्ति करते हुए 'गिर्दा' आम जनता का मनोबल और जोष को बढ़ाते हुए कहते है–

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

वैणी फांसी नी खाली जां रौली नि पडाल भाई

मेरी वाली उमर नि माजौ तलिऊना कढ़ाई

रम, रैफल, लफ्ट–रैट कसि हुछों बतुलों

हम लड़ते रैया भुली! हम लड़ते रूलों !

उत्तराखण्ड राज्य बन जाने के दस साल बाद तक भी 'गिर्दा' अपने आखिरी दिनों तक इस सपने को अपनी पीठ पर लादे धरने पर बैठे रहे कभी सड़क पर कभी मंच पर, कभी जूलूस में पहाड़ के विनाषकारी मॉडल के विरोध पर अपना मत देते रहें वे एक सच्चे देष भक्त,राज्य भक्त और प्रकृति प्रेमी थे।

'षेरदा' में जहाँ कबीर के दर्षन होते हैं वही 'गिर्दा' में नागार्जुन के दर्षन होते हैं दोनों ही क्रन्तिक्रारी कवि थे दोनों में अपनी मातृभूमि के प्रति लगाव, अपने क्षेत्र के प्रति दयाभाव था दोनों जनमानस की पीड़ा से परिचित थे सामाजिक परिर्वतन तथा सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करना दोनों का ही संकल्प था। 'गिर्दा' को उत्त्राखण्ड का जनवादी कवि माना जाता है।

Volume 7, Issue3, (July-September, 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed Journal

साभार

(1) शेरदा समग्र, प्रथम संस्करण 2008 (अंकित प्रकाषन हल्द्वानी) ।

(2) 'हमारी कविता के ऑखर' तिवाड़ी गिरीष, पाठक शेखर, श्याम प्रकाषन, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो

गाँधी मार्ग।

(3) उत्तराखण्ड काव्य, तिवारी गिरीष, पहाड़ पोथी (2002)।

(4) कुमाउनी काव्य संकलन, रावत प्रो0 चन्द्रकला, देव भूमि प्रकाषन ।

(5) दुदबोली , मठपाल यषोधर , रामगंगा प्रकाषन।

(6) जनपदीय भाषा साहित्य बिष्ट डॉ0 शेरसिंह, जोषी डॉ0 सुरेन्द्र, अंकित प्रकाषन ।

(7) कुमाउनी लोक साहित्य एवं कुमाउनी साहित्य, पोखरिया देवसिंह, अल्मोड़ा बुक डिपो।

(8) कुमाउनी लोक साहित्य एवं लोक गीत, पोखरिया देवसिंह अल्मोड़ा बुक डिपो।

(9) कुमाउनी भाषा और उसका साहित्य टण्डन राजर्षि पुरूषोत्तम दास, हिन्दी भवन लखनऊ।

(10) छोड़ो गुलामी खिताब, पाण्डे चारूचन्द्र, पहाड़ परिक्रमा, तल्ला डांडा नैनीताल।